ज्योतिष और रक्षाबंधन

श्रावण मास का उच्चारण करते ही मन हर्षित हो उठता है तथा एक हरीतिमायुक्त शांत सुरम्य वातावरण का चित्र मन में बन जाता है। भारतीय महिनों का नामकरण 12 नक्षत्रों के आधार पर ही किया गया है। पूर्णिमा को जिस मास में श्रवण नक्षत्र होता है वही श्रावण कहलाता है। इस माह की पूर्णिमा को सूर्य चन्द्रमा विपरीत दिशा में रहते हैं। श्रावण मास का महत्व एक विशेष अमृतमयी शक्ति उत्पन्न होने के कारण बना हुआ है। यह शक्ति क्या हैं? और किसे कब प्राप्त हो सकती है यही एक विचारणीय विषय है। ज्योतिष शास्त्र में श्रावण का नामकरण श्रवण नक्षत्र के कारण हुआ तथा श्रवण नक्षत्र का नामकरण श्रवण कुमार नामक प्रसिद्ध मातृ-पितृ भक्त के कारण हुआ है। शास्त्रीय एवं खगोलीय स्थिति के अनुसार श्रवण नक्षत्र में तीन तारे होते हैं और वे तीन चरण (वामन भगवान के तीन कदम) के प्रतीक चिन्ह हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार श्रवण के माता-पिता एवं स्वयं श्रवण कुमार के प्रतीक तीन तारे हैं और अभिजित नक्षत्र राजा दशरथ का प्रतीक है कि छिपकर शिकार मुद्रा में बैठा हुआ है।

अभिजित् नक्षत्र की आकृति त्रिकोणात्मक है और शिकार के समय धनुष की प्रत्यंचा बाण चढ़ाने की मुद्रा भी त्रिकोणात्मक होती है। उत्तराषाढ़ा एवं पूर्वाभाद्रप्रद दोनों नक्षत्रों की आकृति मंच की तरह है तथा तारों की संख्या भी दो ही है। उत्तराभाद्रपद नक्षत्र की आकृति जोड़ी में बैठे स्त्री पुरूष की है और ये ही श्रवण के माता-पिता हैं। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का मंच राजा दशरथ का है तो पूर्वाभाद्रपद के मंच पर श्रवण अपने माता-पिता का स्थान बनाकर रहता है। पौराणिक एवं लोकश्रुति के अनुसार श्रवण कुमार के वृद्ध माता-पिता थे।

विवाहोपरांत उनकी पत्नी उन्हें भोजनादि की व्यवस्था किया करती थी। श्रवण कुमार को तो खीर आदि मिष्ठान्न तथा वृद्ध अंधे सास-ससुर को आटे की राबड़ी एक साथ बनाती थी, जिससे शक भी नहीं हो सकता था। एक दिन श्रवण के माता-पिता ने खीर बनाने को कहा, उस दिन श्रवण कुमार ने खीर खायी, लेकिन माता-पिता को दुष्ट स्वभाव की पत्नी ने राबड़ी ही दी। थाली परिवर्तन करने पर श्रवण कुमार को वास्तविकता का भान हुआ तो वैराग्य उत्पन्न होने के कारण माता-पिता को कावड़ में बैठाकर तीर्थ करवाने ले गया, प्यासे माता-पिता को पानी पिलाने के लिये तालाब में पानी लेने गया तो राजा दशरथ ने शब्दभेदी बाण चला दिया। मनुष्य की आवाज सुनकर राजा पास गये तो युवक मरणासन्न पड़ा था। राजा को उसने अपना परिचय देकर माता-पिता को पानी पिलाने का आग्रह किया। राजा ने जब यह दुर्घटना युवक के माता-पिता को सुनाई तो वे स्तब्ध रह गए और दशरथ को श्राप दे डाला, लेकिन राजा दशरथ ने प्रायश्चित करते हुए कहा कि आज जो नक्षत्र है उसका नाम सर्वपूज्य होगा तथा श्रावणी पूर्णिमा को प्रत्येक द्वार पर सर्वप्रथम इसकी पूजा होगी। पूरा माह श्रावण नाम से जाना जायेगा। जिसमें इतना पानी बरसेगा कि पानी के लिये बाहर जाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। वास्तव में श्रावण माह का काल वर्षा के कारण अत्यन्त रमणीय हो जाता है और इसी कारण मादकता का पर्याय श्रावण मास बन गया है।

श्रावण मास में सूर्य प्रायः कर्क राशि पर रहता है और कर्क राशि भी जलचर राशि है।

जिस प्रकार राजा दशरथ ने श्रावणी पूर्णिमा को प्रायश्चित किया था, उसी प्रकार त्रिवर्ण के लोग प्रायश्चित्त निमित्त श्रावणी कर्म सम्पन्न करते हैं तथा अध्ययन- अध्यापन के लिये श्रेष्ठ काल मानते है और इसीलिए प्राचीनकाल में नए सत्र का प्रारंभ श्रावणी पूर्णिमा से ही हुआ करता था और उसी परम्परा को ध्यान में रखकर सरकार ने भी बच्चों का नया सत्र जुलाई मास से प्रारम्भ कर रखा है।

शिव आराधना की दृष्टि से भी श्रवणयुक्त पूर्णिमा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। रक्षासूत्र का सम्बन्ध भी श्रवण नक्षत्र से होता है क्योंकि सरसों, केशर, चंदन, अक्षत, दूर्वा, सुवर्ण आदि को एक पोटली में बांधकर उस वस्त्र को सूत्र में बांधकर पुरूष के दाहिने हाथ की कलाई में तथा स्त्री के वाम हाथ की कलाई में बांधने पर रक्षाबंधन हो जाता है। श्रवण नक्षत्र में बांधा गया यह रक्षा सूत्र अमरता, निडरता, स्वाभिमान, कीर्ति, उत्साह एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाला होता है। पौराणिक काल में तो पत्नी अपने पति की रक्षा के लिए इस प्रकार का बंधन किया करती थी, लेकिन परंपरा बदलते-बदलते अब भाई-बहिन के रिश्ते पर आ गई है।

♦♦♦